# Jain Darshan Me Tattva Aur Gyan


| | |
|---|---|
| Folder No. | 006274 |
| Granth Name | Jain Darshan Me Tattva Aur Gyan |
| Author | Sagarmal Jain, Ambikadutt Sharma, Pradipkumar Khare |
| Publisher | Prakrit Bharti Academy |
| Edition | 1 |
| Year | |
| Pages | 720 |


# जैन दर्शन में तत्त्व और ज्ञान


| | |
|---|---|
| फोल्डर नं. | ००६२७४ |
| ग्रन्थ | जैन दर्शन में तत्त्व और ज्ञान |
| लेखक | सागरमल जैन, अम्बिकादत्त शर्मा, प्रदीपकुमार खरे |
| प्रकाशक | प्राकृत भारती एकेडमी |
| आवृत्ति | १ |
| प्रकाशन वर्ष | |
| पृष्ठ | ७२० |


मुख्य टाइटल
स्वकीय
प्रकाशकीय
पुरोवाक
अनुक्रम


जैन तत्त्वदर्शन ---------- ३
- जैन तत्त्वमीमांसा का ऐतिहासिक विकास क्रम ---------- ३
- जैन दर्शन में सत् का स्वरूप ---------- १३
- जैन दर्शन में द्रव्य गुण एवं पर्याय की अवधारणा ---------- २३
- जैन दर्शन में पंचास्तिकाय एवं षट्द्रव्य ---------- ४०
- जैन दर्शन में आत्मा या जीवतत्त्व ---------- ५५
- महावीर के समकालीन आत्मवाद एवं जैन आत्मवाद का वैशिष्ट्य ---------- ७४
- जैन दर्शन में पुद्गल तत्त्व और परमाणु की अवधारणा ---------- ८५
- जैन तत्त्वमीमांसा और आधुनिक विज्ञान ---------- ९८

जैन ज्ञानदर्शन ---------- ११५
- जैन दर्शन में पंचज्ञानवाद ---------- ११५
- जैन दर्शन में प्रमाण विवेचन ---------- १३३
- जैन दर्शन में प्रमाण लक्षण विवेचन ---------- १३९
- जैन दर्शन में ज्ञान का प्रामाण्य और कथन की सत्यता ---------- १४६
- जैन दर्शन के तर्क प्रमाण का आधुनिक सन्दर्भों में मूल्यांकन ---------- १५६
- बौद्ध और जैन प्रमाणमीमांसा का तुलनात्मक अध्ययन ---------- १८४
- जैन दर्शन का नयसिद्धांत ---------- २०१
- निश्चय और व्यवहार किसका आश्रय लें ---------- २१०
- सप्तभंगी प्रतीकात्मक और त्रिमूल्यात्मक त्रकशास्त्र के संदर्भ में ---------- २३१

शब्द की याच्य शक्ति ---------- २५०
जैन वाक्य दर्शन ---------- २६०
जैन धर्मदर्शन एवं आचार शास्त्र ---------- २७९
प्रवर्तक और निवर्तक धर्मों का मनोवैज्ञानिक विकास एवं सांस्कृतिक प्रदेय ---------- २७९
नैतिक मूल्यों की परिवर्तनशीलता एवं सापेक्षता का प्रश्न ---------- २८५
मूल्य और मूल्यबोध की सापेक्षता का सिद्धान्त ---------- २९९
हरिभद्र के धर्मदर्शन में क्रांतिकारि तत्त्व ---------- ३१९
हरिभद्र की क्रान्तदर्शी दृष्टि ---------- ३२९
हरिभद्र के धूर्ताख्यान का मूल स्रोत एवं वैज्ञानिक महत्त्व ---------- ३३३
जैन दार्शनिकों का अन्य दर्शनों को विविध अवदान ---------- ३३६
सामाजिक समस्याओं के समाधान में जैनधर्म का योगदान ---------- ३४७
जैन दर्शन का कर्म सिद्धान्त ---------- ३५८
जैन बौद्ध और गीता के दर्शन में कर्म का अशुभत्व, शुभत्व और शुद्धत्व ---------- ३९८
जैन बौद्ध और गीता दर्शन में मोक्ष का स्वरूप ---------- ४१८
गुणस्थान सिद्धान्त का उद्भव और विकास ---------- ४२८
संयम जीवन का सम्यक् दृष्टकोण ---------- ४४४
जैन योग पद्धति और उस पर अन्य योग पद्धतियों का प्रभाव ---------- ४५५
तंत्र साधना और जैन जीवन दृष्टि ---------- ४७२
ऋषिभाषित का धर्म संकगुल ---------- ४८९
जैन अनेकान्तदर्शन ---------- ५०९
जैन दर्शन में अनेकान्त सिद्धान्त और व्यवहार ---------- ५०९
जैनागम और चार्वाक दर्शन ---------- ५७३
प्राचीन जैनागमों में चार्वाक दर्शन का प्रस्तुतिकरण ---------- ५७३
ऋषिभाषित में प्रस्तुत चार्वाक दर्शन ---------- ५८१
राजप्रश्नीय सूत्र में चार्वाकमत का प्रस्तुतिकरण एवं समीक्षा ---------- ५८६
जैन दृष्ट में बौद्ध धर्मदर्शन ---------- ५९३
भारतीय संस्कृति के दो प्रमुख घटकों का सहसम्बन्ध ---------- ५९३
भारतीय दार्शनिक ग्रन्थों में प्रतिपादित बौद्ध धर्म एवं दर्शन ---------- ६०७
महायान बौद्ध धर्म की समन्वयात्मक जीवन दृष्टि ---------- ६२९
बौद्ध धर्म में सामाजिक चेतना ---------- ६४०
धर्मनिरपेक्षता और बौद्ध धर्म ---------- ६४९
प्रो. सागरमल जैन का जीवनवृत्त ---------- ६५९